निदर्शन के प्रकार

निदर्शन के चयन में समस्याओं के अनुरूप अनेक प्रणालियाँ प्रचलित हैं। प्रत्येक प्रणाली की अपनी अलग-अलग विशेषताएँ होती हैं। *इसकी मुख्यत: चार प्रणालियाँ हैं*

(i) दैव निदर्शन (ii) स्तरित निदर्शन
(iii) उद्देश्यपूर्ण निदर्शन (iv) अन्य

इसके अलावा सामाजिक अनुसन्धान में निदर्शन की अनेक पद्धतियों का प्रयोग किया जाता है जिन्हें हम **दो प्रमुख श्रेणियों** में विभाजित करते हैं

सम्भावित निदर्शन के ही अन्तर्गत दैव निदर्शन आता है इसके अतिरिक्त इसके अन्तर्गत, लाटरी पद्धति, ग्रिड पद्धति, दैव संख्या सारणी पद्धति आदि आते हैं। इसी प्रकार दैव निदर्शन पद्धति का प्रयोग अनेक रूपों में किया जाता है जिसमें सरल दैव निदर्शन, स्तरीकृत दैव निदर्शन, क्षेत्रीय या गुच्छ निदर्शन, द्विश: या पुनरावृत्ति निदर्शन एवं क्रमबद्ध निदर्शन आते हैं।

असम्भावित निदर्शन पद्धति के अन्तर्गत भी अनेक पद्धतियाँ आती हैं;

जैसे—अभ्यंश या कोटा निदर्शन, उद्देश्यपूर्ण निदर्शन एवं आकस्मिक निदर्शन आते हैं।

निदर्शन के गुण

(i) समय की बचत
(ii) धन की बचत
(iii) परिश्रम की बचत
(iv) अधिक गहन अध्ययन की सम्भावना
(v) निष्कर्षों की परिशुद्धता
(vi) प्रशासनिक सुविधा

जैसे—अनुसन्धान क्षेत्र प्राय: बड़ा होता है और जिसमें प्रत्येक सूचनादाता के पास पहुँचना सम्भव नहीं होता तथा सूचनादाता की अनिच्छा से बचा जा सकता है।

निदर्शन के दोष

(i) अभिरुचि की समस्या
(ii) प्रतिनिधित्व का सही रूप में चयन न हो पाना
(iii) विशेष ज्ञान की आवश्यकता
(iv) पक्षपात की सम्भावना

निदर्शन प्रणाली में उपरोक्त दोषों के बावजूद इसमें असंख्य अच्छाइयाँ हैं क्योंकि इसमें समग्र में से कुछ चुनी हुई इकाइयों का अध्ययन करते हैं तत्पश्चात् जो निष्कर्ष निकालते हैं वह सार्वभौमिक रूप से सबके लिए मान्य होता है साथ-साथ यह समय, धन तथा परिश्रम की बचत करता है।

आँकड़े संकलन की विधियाँ—अवलोकन

मनुष्य सदा अवलोकन करता रहता है, जिससे उसके ज्ञान में वृद्धि होती रहती है। यह सूचना प्राप्त करने की हमारी सबसे प्राथमिक एवं प्राचीन विधि है। अवलोकन को वैज्ञानिक विधि की शास्त्रीय विधि भी कहा जा सकता है। प्राकृतिक विज्ञानों के सिद्धान्त मुख्यत: अवलोकन पद्धति की ही देन हैं। सामाजिक विज्ञानों में भी अवलोकन तथ्य संकलन एवं ज्ञान संग्रह की मौलिक विधि है।

अवलोकन शब्द अंग्रेजी के (observation) का हिन्दी रूपान्तर है। इसे निरीक्षण या प्रेक्षण भी कहते हैं। अवलोकन का सामान्य अर्थ होता है—**आँखों के द्वारा देखना**। इसमें मानव इन्द्रियों के द्वारा प्रत्यक्ष एवं गहन अध्ययन किया जाता है। **गुडे एवं हाट** का कहना है "विज्ञान निरीक्षण से प्रारम्भ होता है और इसको अन्तिम रूप से प्रमाणीकरण के लिए निरीक्षण पर लौट आना पड़ता है।"

अवलोकन की परिभाषाएँ

- **पी वी यंग** के अनुसार, "अवलोकन स्वाभाविक घटना का घटित होते समय नेत्रों द्वारा सुव्यवस्थित एवं सोद्देश्य अध्ययन है।"
- **गाल्टुंग** के अनुसार, "अवलोकन सभी प्रकार की इन्द्रियग्राह्य विषय-वस्तु का आलेखन है।"
- **सी ए मोजर** के अनुसार, "ठोस अर्थ में अवलोकन में कानों एवं वाणी की अपेक्षा आँखों का अधिक उपयोग होता है।"
- **कुर्ट लेविन** के अनुसार, "सभी प्रकार के अवलोकन अन्तत: विशेष घटनाओं या विशेष समूहों में वर्गीकृत होते हैं। वैज्ञानिक विश्वसनीयता सही अवलोकन या प्रत्यक्षीकरण और सही वर्गीकरण पर ही आधारित है।"

परिभाषाओं के द्वारा स्पष्ट है कि अवलोकन प्राथमिक तथ्यों को एकत्रित करने की एक महत्त्वपूर्ण पद्धति है। इस पद्धति के द्वारा शोधकर्ता सामाजिक घटनाओं एवं उनकी वस्तुस्थिति का यथार्थ रूप में निरीक्षण करके तथ्यों को संकलित करता है। अवलोकन प्रणाली तथ्य संकलन की एक ऐसी प्रणाली है जिसमें प्रत्यक्ष प्रश्न किए बिना घटना के सम्बन्ध में व्यवस्थित ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है।

अवलोकन की विशेषताएँ

1. मानव इन्द्रियों का उपयोग
2. प्राथमिक आँकड़ों का संकलन
3. प्रत्यक्ष एवं सूक्ष्म अध्ययन
4. विश्वसनीय सूचना का स्रोत
5. सामूहिक व्यवहार का अध्ययन
6. पारस्परिक एवं कार्य-कारण सम्बन्ध का पता लगाना
7. उपकल्पना का निर्माण

अवलोकन के प्रकार 8

क्षेत्र-अवलोकन जो नियन्त्रित एवं स्वाभाविक परिस्थितियों में किए जाते हैं।

प्रयोगशाला अवलोकन तो नियन्त्रित एवं कृत्रिम दशा में किए जाते हैं।

सामान्य अवलोकन जो हम सामान्य रूप से रोजमर्रे के जीवन में सूचना प्राप्ति के लिए करते हैं।

व्यवस्थित अवलोकन वैज्ञानिक विधि में या तथ्य संकलन में प्रयोग करते हैं।

सहभागी अवलोकन जिसमें अवलोकनकर्ता तथ्य संकलन के लिए समूह का ही एक सदस्य बन जाता है भले ही अस्थायी तौर पर।

असहभागी अवलोकन इसमें बिना समूह की गतिविधियों में भाग लिए एक तटस्थ वैज्ञानिक शोधकर्ता के रूप में तथ्य संकलित किए जाते हैं।

नियन्त्रित अवलोकन यह वह अवलोकन है जब शोधकर्ता अपने विषय को नियन्त्रित दशा में अवलोकित करता है इन्हें संरचित अवलोकन भी कहते हैं।

अनियन्त्रित अवलोकन जब शोधकर्ता अनियन्त्रित दशा में अवलोकन करता है इसे असंरचित अवलोकन भी कहते हैं।

इनके अतिरिक्त सामूहिक अवलोकन, अर्द्धसहभागी अवलोकन (सहभागी एवं असहभागी अवलोकन के मध्य की स्थिति) आदि प्रकारों का भी उल्लेख किया जाता है।

Scanned with CamScanner

अवलोकन पद्धति का महत्त्व या गुण

(i) मानवीय क्रियाओं एवं व्यवहार का प्रत्यक्ष अवलोकन
(ii) घटनाओं का तात्कालिक अध्ययन
(iii) गहन सूचना प्राप्त करने में सहायक
(iv) अन्वेषणात्मक एवं निर्माणात्मक स्थिति में उपयोगी
(v) विस्तृत विवरण एवं समग्रात्मक अध्ययन
(vi) सामान्य सूचनाएँ प्राप्त करने में सहायक
(vii) अधिक विश्वसनीय

अवलोकन पद्धति की सीमाएँ या दोष

(i) सीमित क्षेत्र
(ii) संख्यात्मक पद्धति का प्रयोग कठिन
(iii) विश्वसनीयता एवं अभिनति की समस्या
(iv) अप्रतिनिधित्व पूर्ण प्रतिदर्श

प्रश्नावली (Questionnaire)

सामाजिक सर्वेक्षण में सम्भवत: तथ्य संकलन की सबसे अधिक प्रचलित विधि प्रश्नावली है उत्तर या सूचना प्राप्त करने के लिए साधारणत: प्रश्नों की जो सूची प्रयुक्त की जाती है उसे प्रश्नावली कहते हैं। प्रश्नावली एवं अनुसूची दोनों ही प्रश्नों की सूचियाँ हैं और कभी-कभी दोनों का प्रयोग एक ही अर्थ में किया जाता है किन्तु सामाजिक अनुसन्धान की भाषा में अनुसूची मुख्यत: साक्षात्कार के लिए एक उपकरण के रूप में प्रयुक्त होती है। जबकि प्रश्नावली को अधिकांशत: उत्तर दाताओं के पास डाक द्वारा भेज दिया जाता है जिसे भरकर उत्तरदाता पुन: शोधकर्ता को लौटा देता है। यही कारण है कि **लुण्डबर्ग** ने प्रश्नावली को एक विशेष प्रकार की अनुसूची भी कहा है जो स्वरूप एवं संरचना की दृष्टि से तो एक-दूसरे के समान है किन्तु प्रयोग की दृष्टि से भिन्न।

प्रश्नावली प्रश्नों की एक क्रमबद्ध सूची है जिसे अध्ययन विषय से सम्बन्धित विस्तृत क्षेत्र के व्यक्तियों के पास भेज दिया जाता है और उससे अनुरोध किया जाता है कि वे उन प्रश्नों का उत्तर स्वयं लिखकर डाक द्वारा ही उपयुक्त समय में वापस भेज दें।

प्रश्नावली की परिभाषाएँ

- **बोगार्डर्स** के अनुसार ''प्रश्नावली विभिन्न व्यक्तियों को उत्तर देने के लिए प्रेषित की गई प्रश्नों की एक सूची है।''
- **गुडे** एवं **हाट** के अनुसार ''सामान्य रूप से प्रश्नावली से तात्पर्य प्रश्नों के उत्तर प्राप्त करने की पद्धति है जिसमें एक पत्रक का प्रयोग किया जाता है जिसे उत्तरदाता स्वयं भरता है।''
- **लुण्डबर्ग** के अनुसार ''मूलभूत रूप में प्रश्नावली उत्तेजकों का एक समूह है जिसे शिक्षित लोगों के सम्मुख प्रस्तुत किया जाता है ताकि इन उत्तेजकों के प्रभाव से उत्पन्न उनके शाब्दिक व्यवहार का परीक्षण किया जा सके।''
- **गी** के अनुसार ''यह (प्रश्नावली) बड़ी संख्या में लोगों से अथवा चुने हुए लघु समूह से, जोकि विस्तृत क्षेत्र में फैला हुआ है सीमित मात्रा में सूचना प्राप्त करने की सुविधाजनक प्रणाली है।''

उपरोक्त परिभाषाओं से यह स्पष्ट होता है कि प्रश्नावली प्रश्नों की एक व्यवस्थित सूची है जिसका उत्तर उत्तरदाता स्वयं लिखकर शोधकर्ता को लौटा देता है सामान्यत: प्रश्नावली डाक द्वारा प्रेषित की जाती है।

प्रश्नावली की विशेषताएँ

1. प्रश्नावली प्रश्नों की सूची है जिसे अनुसन्धानकर्ता उत्तरदाता के साथ डाक द्वारा भेजता है।
2. प्रश्नावली में जिन प्रश्नों को सम्मिलित करके प्रयोग किया जाता है उन्हें टाइप अथवा प्रकाशित करा लिया जाता है।
3. प्रश्नावली को भरते समय अनुसन्धानकर्ता द्वारा सूचनादाता को किसी प्रकार की सहायता नहीं दी जाती।
4. प्रश्नावली का उपयोग केवल शिक्षित और समाज के व्यक्तियों से आँकड़ों को एकत्रित करने हेतु किया जाता है।
5. प्रश्नावली के प्रश्नों का निर्माण खोज के विषय के उद्देश्य एवं प्रकृति को ध्यान में रखकर किया जाता है।
6. प्रश्नावली का निर्माण एक विस्तृत क्षेत्र में कम व्यय से किया जा सकता है।
7. प्रश्नावली को सूचनादाताओं के पास प्रेरित करते समय शोधकर्ता सही तथ्य भरकर उसे शीघ्र लौटाने के लिए एक सहभागी पत्र भेजता है।

प्रश्नावली के प्रकार

सामाजिक अनुसन्धान में अनेक प्रकार की प्रश्नावलियों का प्रयोग किया जाता है इसका वर्गीकरण अनेक आधारों पर किया जाता है जो निम्नलिखित हैं

सूचनाओं के आधार पर वर्गीकरण

जी ए लुण्डबर्ग ने सूचनाओं के आधार पर दो प्रकार की प्रश्नावली में विभाजित किया है

(i) तथ्य सम्बन्धी प्रश्नावली (ii) मत एवं मनोवृत्ति सम्बन्धी प्रश्नावली

संरचना के आधार पर वर्गीकरण

पी वी यंग ने इस आधार पर प्रश्नावली को दो श्रेणियों में विभाजित किया है

(i) संरचित प्रश्नावली (ii) असंरचित प्रश्नावली

प्रश्नों की प्रकृति के आधार पर

इस आधार पर प्रश्नावली को चार वर्गों या श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है

(i) प्रतिबन्धित प्रश्नावली (ii) खुली प्रश्नावली
(iii) मिश्रित प्रश्नावली (iv) चित्रमय प्रश्नावली

प्रश्नावली की रचना अथवा निर्माण

(i) अनुसन्धान समस्या की जानकारी होनी चाहिए
(ii) सहयोगियों तथा विशेषज्ञों से विचार-विमर्श
(iii) प्रश्नावली का पूर्व-परीक्षण
(iv) प्रश्नावली की छपाई।

प्रश्नावली के प्रयोग की पद्धतियाँ

इसकी मुख्यत: दो पद्धतियाँ हैं

(i) प्रत्यक्ष सम्बन्ध (ii) डाक द्वारा प्रेषित प्रश्नावली

Scanned with CamScanner

प्रश्नावली के गुण

(i) विस्तृत क्षेत्र का अध्ययन
(ii) सूचनाओं की शीघ्र प्राप्ति
(iii) प्रमाणित एवं स्वतन्त्र सूचनाएँ
(iv) प्रश्नावली भरने की सुविधा
(v) सरल प्रविधि
(vi) पुनरावृत्ति सम्भव
(vii) कम खर्चीली
(viii) समय की बचत
(ix) सरल सांख्यिकीय विश्लेषण

प्रश्नावली के दोष

(i) केवल शिक्षितों का अध्ययन सम्भव
(ii) सूक्ष्म एवं गहन अध्ययनों में अनुपयुक्त
(iii) अपूर्ण सूचना
(iv) प्रत्युत्तर की समस्या
(v) सार्वभौमिक प्रश्न असम्भव
(vi) अस्पष्ट लेख
(vii) अनुसन्धानकर्ता की सहायता का अभाव
(viii) सूचनाओं की अविश्वसनीयता

Scanned with CamScanner